॥भारतात्मा पुरस्कार॥

भारतात्मा अशोकजी सिंघल वैदिक पुरस्कार - 2019

वेद सेवा को समर्पित

भारतात्मा अशोकजी सिंघल

अशोकजी सिंघल द्वारा हिन्दु धर्म के उत्थान के लिये किए गए कार्य जग जाहिर हैं। लेकिन जो कम ज्ञात है वो है उनका वेद ज्ञान और वेदों और वैदिक शिक्षा के प्रसार-प्रचार लिये उनके द्वारा किए गए कार्य।

कानपुर में संघ प्रचारक के रूप में काम करते हुए अशोकजी अपने गुरुदेव के द्वारा वेदों के अध्ययन के लिए प्रेरित हुए। गुरुदेव वेदों और शास्त्रों में पारंगत थे।

संघ के प्रति अपने कर्तव्यों और वेदों सेवा के प्रति अपनी निष्ठा के बीच फंसने पर उन्होंने तत्कालीन सरसंघचालक गुरुजी गोवलकर जी से इस दुविधा से निकलने में मार्गदर्शन मांगा। जब गुरुजी गोवलकर ने उन्हें वैदिक ज्ञान की उनकी इच्छा का अनुसरण करने की आज्ञा दी तब उनके गुरुदेव ने यह सलाह दी कि वेदों का ज्ञान और संघ का नेक कार्य दोनों साथ किये जा सकते हैं। इस प्रकार हिन्दु धर्म की सेवा में उनकी लम्बी यात्रा शुरु हुई जिसमें संघ के अन्तर्गत विश्व हिन्दु परिषद का गठन भी शामिल था।

अशोकजी की यह दृढ़ मान्यता थी कि सिर्फ वेदों के संरक्षण और विस्तार द्वारा ही भारतीय संस्कृति जीवित रह सकती है। अपने कार्यों के द्वारा अशोकजी ने तीन विश्व वेद सम्मेलन आयोजित करवाए जिनमें पहला सन 1992 में हुआ। ये सम्मेलन विश्व के सर्वोच्च वेद पंडितों का अद्भुत संगम था। इन्होंने विश्व के वेद पंडितों को एक साथ लाने का काम किया और यह बताया कि हिन्दु जीवन और संस्कृति में वेदों का कितना योगदान है। इनके नेतृत्व में विश्व हिन्दू परिषद ने अनेक वेद विद्यालय शुरु किए जो आज भी चल रहे हैं। अशोकजी के कहने पर उनके परिवार ने प्रयाग स्थित पैतृक निवास का एक भाग ऐसे ही एक वेद विद्यालय को सौंप दिया।

भारतात्मा अशोकजी सिंघलः

अशोकसिंघलमहाभागेन हिन्दुतायाः अग्रेसारणाय विहितं कार्यं सुविदितमेव तथापि तस्य वैदिकज्ञानं तथा वेदानां वैदिकविद्यानां च प्रचाराय तेन कृतं कार्यं तावत् अप्रसिद्धमेवस्ति।

अशोकमहाभागः कर्णपुरे राष्ट्रियस्वयंसेवकसंघस्य प्रचारकार्यरतः यदा आसीत् तदा वेदशास्त्रयोरद्वितीयाऽवबोधवता तद्गुरुदेवेन वेदं पठितुं प्रेरितः अभूत्।

संघविधिनिर्वहण-वेदपठनोत्साहयोर्मध्ये दोलायमानमनस्कः स एकदा तदानीन्तनसर्वसंघसञ्चालकान् गुरून् गोलवकरमहाभागान् समस्यापरिष्कारमार्गदर्शनमयाचत्। गुरुः गोलवकरमहाभागः यदा वेदविद्यार्जनतृष्णोपशमनमनोऽन्वमनुत तद्गुरुदेवः वेदविद्यार्जनं, महोन्नतं संघकार्यं च सहैव साधयितुमसूचयत्। अयमारम्भोऽभूत्तस्य सुदीर्घहिन्दुसेवाप्रस्थानस्य, राष्ट्रिस्वयंसेवकसंघान्तर्गतरूपेण विश्वहिन्दुपरिषदः स्थापनस्य च।

अशोकजीमहाभागः दृढं विश्वसिति स्म यत् केवलं वेदानां परिरक्षणप्रचाराभ्यामेव भारतीयसंस्कृतिः जीवितुं शक्नोतीति। अशोकजीमहाभागः त्रीणि विश्ववेदसम्मेलनानि समायोजयत्, येषामाद्यं १९९२ वर्षे अभूत्। इमानि समग्रप्रपञ्चाग्रगण्यवेदविद्वदधिवेशनरूपाणिसम्मेलनानि शतशः वेदविद्वद्वरेण्यान् एकत्र सङ्घटयितुं, हिन्दुजीवनसंस्कृत्योः कृते वेदानां योगदानं प्रकाशयितुं च उपकारकाणि आसन्। अस्य महाभागस्य नेतृत्वे नैकसंख्याकाः वेदपाठशालाः विश्वहिन्दुपरिषदा समारभ्यन्त, या अधुना अपि प्रचलन्ति। अशोकमहाभागस्य निवेदनानुसारं तस्य परिजनैः प्रयागस्थितस्य स्वपैतृकनिवासस्य एको भागः एतादृशाय एव वेदविद्यालयाय समर्पित आसीत्।

Bharatatma Ashokji Singhal

The work of Ashok Singhal for the furtherance of Hinduism is well known. What is less known is his own knowledge of the Vedas and his work towards propagation of the Vedas and of Vedic education.

While working as a Pracharak for the Rashtriya Swayamsevak Sangh in Kanpur, Ashokji was inspired to study the Vedas by his Gurudev, whose knowledge of the Vedas and Shastras was second to none.

Caught between his duties for the RSS and the call of the Vedas, he sought guidance from the then Sarsanghchalak, Guruji MS Golwalkarji on how to resolve this dilemma. When Guruji Golwalkar permitted him to follow his quest for Vedic knowledge, his Gurudev advised him that his quest for knowledge and the noble work of the RSS could be done together. This started his long journey in the service of Hinduism including the setting up of The Vishva Hindu Parishad within the RSS fold.

Ashokji firmly believed that only through the protection and propagation of the Vedas could Indian culture survive. Through his work Ashokji organised three Vishva Ved Sammelans the first one being in 1992. These sammelans, unique gatherings of the world's top Vedic scholars, served to bring together hundreds of Vedic scholars and bring forth the contribution that the Vedas make to Hindu life and culture. Under his leadership, a number of Veda schools were started by the VHP and these schools are still in operation. A part of Ashokji's ancestral home in Prayag was given up for one such school.

उत्कृष्ट वेद विद्यार्थी

यह पुरस्कार उस छात्र को दिया जाएगा जिसने वेदों के अध्ययन में श्रेष्ठ प्रदर्शन किया है।

पुरस्कार के अन्तर्गत एक प्रमाण पत्र, पदक और **₹ 3,00,000** की नकद राशि प्रदान की जाएगी।

इस पुरस्कार के योग्य होने के लिए आपको निम्नलिखित सभी पात्रताएं पूरी करना आवश्यक है:

- वर्तमान में आप किसी वैदिक परंपरा, योग्य वेद पाठशाला या व्यक्तिगत गुरु के पूर्णकालिक छात्र हैं।
- वेदों के अध्ययन में मूलांत से ले कर वर्तमान में आपकी वैदिक योग्यता के स्तर का स्पष्ट और प्रमाण योग्य अभिलेख (रिकॉर्ड) उपलब्ध है।
- आपने "स्तर-1" की न्यूनतम योग्यताएं प्राप्त कर ली हों (कृपया "आवेदन कैसे करें" की तालिका देखें) ।
- यदि आपकी योग्यता 'स्तर-2' की है तो 1 अगस्त 2019 को आपकी आयु 20 वर्ष से कम होनी चाहिए। 'स्तर-2' से आगे की योग्यता होने की स्थिति में न्यूनतम आयु सीमा 25 वर्ष तक बढ़ाई जा सकती है।
- आपने पूर्व में भारतात्मा उत्कृष्ट विद्यार्थी पुरस्कार नहीं जीता है।

पात्र विद्यार्थियों की श्रेष्ठता का मूल्यांकन निम्न आधार पर किया जाएगा:

- अध्ययन में श्रेष्ठता जो वैदिक शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर शैक्षिक उपलब्धियों द्वारा प्रमाणित हुई है।
- वैदिक शिक्षा में निरन्तरता।
- पढ़े गए वेद के पारंपरिक पाठ में प्रवाह ।
- शिक्षा के अन्य क्षेत्रों में रूचि की स्तर ।
- वैदिक परम्पराओं के अनुसार जीवन आचरण।
- स्वशाखा या अन्य वेद ग्रंथों के अतिरिक्त वेदों का अध्ययन।

जब आप पुरस्कार के लिये आवेदन करें तो यह सुनिश्चित करें कि आपने योग्यता मानदण्डों को पूरा करने के लिए आवश्यक सभी दस्तावेज साक्ष्य के तौर पर प्रस्तुत कर दिए हैं।

आदर्श वेदाध्यापक

यह पुरस्कार वेदों के उस अध्यापक को दिया जाएगा जिसने वेदों के अध्यापन में समर्पण और प्रतिबद्धता का प्रदर्शन किया है।

इस पुरस्कार के अन्तर्गत एक प्रमाण पत्र, पदक और **₹ 5,00,000** की नकद राशि प्रदान की जाएगी।

इस पुरस्कार के योग्य होने के लिये आपको निम्नलिखित सभी पात्रताएं पूरी करना आवश्यक है:

- वर्तमान में आप किसी योग्य वेद विद्यालय में अध्यापक हैं या कुमाराध्यापक/एकमात्र अद्यापक हैं और स्वयं का गुरुकुल चला रहे हैं।
- पूर्ण रूप से वेदों के अध्यापन और प्रसार के लिये समर्पित हैं।
- आपने न्यूनतम "स्तर-2" की योग्यताएं प्राप्त कर ली हों (कृपया "आवेदन कैसे करें" की तालिका देखें) ।
- कम से कम 10 साल से पूर्णकालिक वेदों के अध्यापन में हैं।
- यदि किसी योग्य विद्यालय में पढ़ा रहे हैं तो आपके कम से कम 5 छात्र होने चाहिए; यदि एक अद्यापक के गुरुकुल में या कुमाराध्यापक हैं तो कम से कम 3 छात्र होने चाहिए।
- आपने पूर्व में भारतात्मा आदर्श वेदाध्यापक पुरस्कार नहीं जीता है।

पात्र अध्यापकों का मूल्यांकन स्वयं और विद्यार्थी की शिक्षा में श्रेष्ठता के लिए निम्न मापदंडों के आधार पर होगा:

- स्तर-२ के अतिरिक्त शैक्षिक योग्यताएं और श्रेष्ठता जैसे स्वशाखा में षडंगा, भाष्य, लक्षण की योग्यताएं और अन्य शाखाओं का अध्ययन या असाधारण वैदिक ज्ञान।
- आपके पूर्व और वर्तमान शिष्यों द्वारा शिक्षा में अर्जित श्रेष्ठता।
- उन छात्रों की श्रेष्ठता जिन्होंने बुनियादी योग्यताओं के बाद भी वैदिक शिक्षा जारी रखी।
- पूर्णकालिक अध्यापन के लिए प्रेरित किये गए छात्रों की संख्या।
- वैदिक परम्पराओं के अनुसार जीवन आचरण

जब आप पुरस्कार के लिये आवेदन करें तो यह सुनिश्चित करें कि आपने योग्यता मानदण्डों को पूरा करने के लिए आवश्यक सभी दस्तावेज साक्ष्य के तौर पर प्रस्तुत कर दिए हैं।

उत्तम वेद विद्यालय

यह पुरस्कार उस वेद विद्यालय को दिया जाएगा जिसने वेदों को सिखाने में सर्वाधिक योगदान दिया है।

इस पुरस्कार के अन्तर्गत एक प्रमाण पत्र, पदक और **₹ 7,00,000** की नकद राशि प्रदान की जाएगी।

इस पुरस्कार के योग्य होने के लिये आपको निम्नलिखित सभी पात्रताएं पूरी करना आवश्यक है:

- विद्यालय जिन्हें केन्द्र या राज्य सरकार या धर्मार्थ न्यास या मन्दिर न्यास से निधि प्राप्त हो रही हो, या गुरुकुल जिसे निजी रूप से एक अध्यापक द्वारा पोषित किया जा रहा हो।
- श्रुति परम्परा के अनुसार वेदों के अध्यापन के लिए समर्पित है।
- लगातार 20 वर्षों से सक्रिय है।
- यदि विद्यालय को सरकार या ट्रस्ट से अनुदान प्राप्त हो रहा है तो विद्यालय में कम से कम 1 अध्यापक और 5 छात्र होने चाहिए; यदि एक अध्यापक का गुरुकुल या कुमाराध्यापक है तो कम से कम 3 छात्र होने चाहिए।
- विद्यालय ने पूर्व में भारतात्मा सर्वश्रेष्ठ वेद विद्यालय पुरस्कार नहीं जीता है।

पात्र विद्यालयों का मूल्यांकन निम्न मापदंडों के आधार पर होगा:

- विद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा अर्जित की गई शैक्षिक श्रेष्ठता
- विद्यालय के अद्यापकों की योग्यताएं और अनुभव
- प्रदान की गई वैदिक शिक्षा (मूलांत से लक्षण/भाष्य इत्यादि) की गहनता
- विद्यालय द्वारा बनाए गए वेद अध्यापकों की गुणवत्ता और संख्या
- दी गई वैदिक शिक्षा का विस्तार (एक से अधिक वेद) और गहराई (उन्नत या असाधारण वेद शास्त्र)

यह सुनिश्चित करें कि आपने योग्यता मानदण्डों को पूरा करने के लिए आवश्यक सभी दस्तावेज साक्ष्य के तौर पर प्रस्तुत कर दिए हैं।

उत्कृष्टवेदविद्यार्थी

वेदाध्ययने समुत्कर्षं प्रदर्शितवते वेदविद्यार्थिने दीयमानः पुरस्कारः ।

अत्र प्रमाणपत्रं, स्मारिका, पदकं, लक्षत्रयात्मकरूप्यराशिश्च **₹ ३,००,०००** भवेत्।

आवेदनयोग्यतांशास्तु अधोनिर्दिष्टप्रकारेण भवन्ति-

- सम्प्रति भवान् वैदिकपरम्परायां योग्यवेदपाठशालायाः व्यक्तिगतगुरोर्वा पूर्णकालिको विद्यार्थी भवेत्।
- वेदाध्ययने मूलान्तादारभ्य भवतः अद्यतनवैदिकयोग्यतायाः स्तरस्य स्पष्टः अन्वेषणयोग्यः च अभिलेखः उपलब्धः भवेत्।
- प्रथमस्तरस्य न्यूनतमयोग्यताः अर्जिताः स्युः । (“कथमावेदनीयम्” इत्यस्य तालिका द्रष्टव्या)
- यदि भवतः योग्यता द्वितीयस्तरस्य वर्तते चेत् “१ अगस्त-१९” दिनाङ्के भवतः आयुः विंशतिवर्षात् न्यूनं स्यात्। द्वितीयस्तराद् अग्रिमायां योग्यतायां सत्यां न्यूतम-आयु-सीमा पञ्चविंशतिवर्षपर्यन्तं वर्धितुं शक्यते।
- इतः पूर्वं भवता “भारतात्मा-उत्कृष्ट-वेदविद्यार्थी” पुरस्कारः न विजितः।

अर्हाणां विद्यार्थिनाम् उत्कर्षस्य मूल्याङ्कनम् अधोनिर्दिष्टविषयायत्तम्-

- संहितामारभ्य मूल-पद-क्रमाद्यध्ययनस्तरेषु परीक्षायां प्रमाणपत्रनिरूपिता अत्युत्कृष्टतयोत्तीर्णता।
- अध्ययने अविच्छिन्नता।
- अधीतवेदस्य पारम्परिकपाठकरणे प्रवाहः।
- वेदसम्बद्धविद्यान्तरेषु समासक्तिः।
- ब्रह्मचारिनियमानुगुणं भवदीयं चारित्रम्।
- स्ववेदशाखाध्ययनेन साकम् अन्यवेदशास्त्राणामध्ययनम्।

योग्यतायाः निश्चायकानि सर्वाणि प्रमाणपत्राणि आवेदनपत्रेण सह संयोजनीयानि।

आदर्शवेदाध्यापक

आत्मार्पणबुद्ध्या वेदाध्यापने प्रतिबद्धायादर्शभूताय अध्यापकाय दीयमानोऽयं पुरस्कारः |

अत्र प्रमाणपत्रं, स्मारिका, पदकं पञ्चलक्षरूप्यराशिश्च **₹ ५,००,०००** भवेत् |

एतदर्थम् अधस्तनयोग्यता: अपेक्ष्यन्ते-

- सम्प्रति कस्यांश्चित् योग्यायां वेदपाठशालायाम् अध्यापक: अस्ति अथवा कुमाराध्यापक: एकलाध्यापकः वा अस्ति तथा च स्वस्य गुरुकुलं चालयति |
- परिपूर्णतया वेदानामध्यापने प्रचारे च प्रतिबद्धः भवेत् |
- द्वितीयस्तरस्य न्यूनतमयोग्यताः अर्जिताः स्युः | (“कथमावेदनीयम्” इत्यत्र तालिका द्रष्टव्या)
- गतदशवत्सरेभ्यः अविच्छिन्नपूर्णकालिको वेदाध्यापको भवेत् |
- यदि योग्यायां वेदपाठशालायां पाठयति चेत् न्यूनातिन्यूनं पञ्चविद्यार्थिनः भवेयुः तथा च यदि कुमाराध्यापकरूपेण अथवा एकाध्यापकगुरुकुले पाठयति तर्हि न्यूनातिन्यूनं त्रयः छात्राः भवेयुः |
- इतः पूर्वं “भारतात्मा आदर्शवेदाध्यापकपुरस्कारः” विजितः न स्यात् |

अर्हाणाम् अध्यापकानां मूल्याङ्कनं तेषां स्वशिक्षया सह छात्राणां शिक्षायाः उत्कृष्टताम् अधोनिर्दिष्टांशान् च विषयीकरोति |

- द्वितीयस्तरम् अतिरिच्य शैक्षणिकयोग्यताः उत्कृष्टता च, यथा- स्वशाखायां षडङ्गस्य भाष्यस्य लक्षणस्य च योग्यताः तथा च अन्यशाखानामध्ययनम् असाधरणवैदिकज्ञानं वा |
- भवदीयपूर्वतनाद्यतनछात्रैर्वेदाध्ययने अर्जिता उत्कृष्टता |
- मूलस्तरादुपरि वेदाध्ययनं कुर्वतां भवच्छात्राणाम् उत्कृष्टता |
- पूर्णकालिकाध्यापनाय प्रेरितानां छात्राणां संख्या |
- वेदोक्तधर्माचरणपूर्वकं जीवनस्य यापनम् |

सर्वाण्यावश्यकानि योग्यताप्रमाणपत्राणि आवेदनपत्रेण साकं योजनीयानि |

उत्तमवेदविद्यालय

वेदशिक्षणे सर्वातिशयियोगदानं कृतवतः वेदविद्यालयस्य कृते दीयमानोऽयं पुरस्कारः |

अत्र प्रमाणपत्रं, स्मारिका, पदकं, सप्तलक्षरूप्यराशिश्च ७,००,००० भवेत् |

अर्हतायाः कृते अधोनिर्दिष्टांशाः आवश्यकाः भवन्ति-

- केन्द्र/राज्यसर्वकारात्, धार्मिकसंस्थायाः, देवालयसंस्थायाः वा प्राप्तानुदानम् अथवा व्यक्तिगतरूपेण एकाध्यापकेन पोषितं गुरुकुलम् |
- सनातनसाम्प्रदायपद्धत्या श्रुतिबोधनपरं गुरुकुलम् |
- गतविंशतिवत्सरेभ्यः अविछिन्नं प्रचाल्यमानम् |
- यदि विद्यालयः सर्वकारेण कयाचित् संस्थया वा अनुदानं प्राप्नोति चेत् विद्यालये न्यूनातिन्यूनं एकः अध्यापकः पञ्चछात्राश्च भवेयुः, यदि एकलाध्यापकस्य गुरुकुलम् अथवा कुमाराध्यापकः वर्तते चेत् न्यूनातिन्यूनं त्रयः छात्राः अपेक्षिताः |
- विद्यालयेन पूर्वं “भारतात्मा-उत्तमवेदविद्यालयपुरस्कारः” न विजितः स्यात् |

पात्रविद्यालयस्य मूल्याङ्कनम् अधस्तनांशान् आधारीकरोति |

- एतत्पाठशालाध्यायिभिः विद्यार्थीभिः अर्जितवेदाध्ययनविषयिणी उत्कृष्टता |
- विद्यालयस्य अध्यापकानां योग्यताः अनुभवश्च |
- प्रदत्तवैदिकशिक्षायाः (मूलान्ताद् लक्षण-भाष्यादिपर्यन्तम्) गहनता |
- विद्यालयेन उत्पादितानां वेदाध्यापकानां गुणवत्ता, संख्या च |
- नैकवेदसंहितानां तद्विकृतीनां शास्त्राणाञ्च बोधनम् |

आवश्यकानि सर्वाणि योग्यताप्रत्यायकानि पत्राणि योजनीयानि |

आवेदनपत्रप्राप्तेः अन्तिमतिथिः १५/०६/२०१९

Excellence by a student

This award will be given to a student who has demonstrated excellence in his study of the Vedas.

The award comprises a certificate, medal and a cash sum of **₹ 3,00,000**.

To qualify for this award you must meet all of the following:

- Be a full time student, in the Vedic tradition, of a qualifying Veda pathshala or individual guru at present.
- Have a clear and traceable record of study of the Vedas from moolant to your current levels of Vedic qualification.
- Have passed the following minimum qualifications of Level – 1 (see table).
- If you have qualifications up to Level – 2, you must be less than 20 years of age as on 1st August 2019. This age limit can be extended up to 25 years for Vedic education beyond Level – 2.
- Have not won the Bharatatma Excellent Student Award before.

Qualifying students will be evaluated for excellence in Vedic study on the following basis:

- Excellence in study as evidenced by the academic achievements at various levels of Vedic education.
- Continuity in Vedic education.
- Fluency in the traditional recitation of the studied Veda.
- Conduct of life as per traditional Vedic practices.
- Study of Vedas other than Swashakha or other Vedic texts.

When applying for the award, please make sure that you provide all the documentary evidence needed to establish that you meet the qualifying criteria.

The Ideal Veda Teacher

This award is given to a teacher of the Vedas who has demonstrated dedication and commitment to the teaching of the Vedas.

The award comprises a certificate, medal and a cash sum of **₹ 5,00,000.**

To qualify for this award you must meet all of the following:

- Currently be a teacher in a qualifying Veda school or be a kumaradhyapaka / single teacher and maintain your own gurukula
- Be dedicated solely to the teaching and propagation of the Vedas
- Have passed the minimum qualifications of Level – 2 (see Table)
- Have been in continuous and full-time teaching of the Vedas for at least ten years.
- If teaching in a qualifying school, must have at least five students; if in a single teacher gurukula / kumaradhyapaka have at least three students.
- Not have won the Bharatatma Ideal Teacher Award in the past

Qualifying teachers will be evaluated on the excellence of their own education and of their students on following basis:

- Academic qualifications and excellence beyond Level – 2 such as qualifications in Shadanga, Bhashya, Lakshana etc. in Swashakha, or study other shakhas or rare Vedic knowledge.
- Academic excellence achieved by your past and present students.
- Excellence of students that have continued Vedic study beyond basic qualifications.
- Number of students motivated to take up full time teaching.
- Conduct of your life as per Vedic practices.

When applying for the award, please make sure that you provide all the documentary evidence needed to establish that you meet the qualifying criteria.

The Best Veda School

This award is given to a school of the Vedas that has contributed most for learning of the Vedas.

The award comprises a certificate, and a cash sum of **₹ 7,00,000**.

To qualify for this award a school must fulfil all of the following criteria:

- Schools funded by central or state governments or charitable trusts or temple trusts or gurukulas personally funded by a single teacher.
- Be dedicated to the teaching of the Vedas in the shruti tradition.
- Are and have been in continuous operation for a period of at least 20 years.
- If in a school funded by government or trusts, must have at least one teacher and five students; if in a single teacher gurukula / kumaradhyapak have at least three students.
- Not have won the Bharatatma Teachers Award in the past ten years.

Qualifying schools will be evaluated on the following basis:

- Academic excellence achieved by students of the school.
- Qualifications and experience of Veda teachers in the school.
- Depth of Vedic education (moolant to lakshan / bhashya etc.) imparted.
- Number and quality of teachers produced by the school.
- Width (more than one Veda) and depth (advanced or rare Vedic texts) of study imparted.

When applying for the award, please make sure that you provide all the documentary evidence needed to establish that you meet the qualifying criteria.

आवेदन कैसे करें

आवेदन प्राप्त करने की अंतिम तिथि **15 जून 2019** है। आवेदन 15 जून से पहले सिंघल फाउण्डेशन के कार्यालय में पहुंच जाने चाहिए। इस तिथि के पश्चात प्राप्त आवेदनों पर 2019 के पुरस्कारों के लिये विचार नहीं किया जाएगा।

प्रत्येक श्रेणी के लिये आवेदन फॉर्म आप हमारी वेबसाइट **www.bharatatmapuraskar.org** से डाउनलोड कर सकते हैं। आवेदन फॉर्म आप +91 73576 58777 पर अपने पूरे पते के साथ SMS भेज कर भी डाक द्वारा प्राप्त कर सकते हैं।

यह सुनिश्चित करें कि योग्यता मापदंडों को पूरा करने के लिए आपने अपने दस्तावेज/प्रमाणपत्र/ अंकतालिकाएं साक्ष्य के तौर पर संलग्न कर दिए हैं।

आप आवेदन हस्तलिखित या माइक्रोसॉफ्ट वर्ड का प्रयोग कर भर सकते हैं. यदि आप आवेदन ईमेल के द्वारा भेज रहे हैं तो सिर्फ .pdf में ही भेजें ना कि .doc या .docx

पूर्णतः भरा हुआ आवेदन फॉर्म डाक या कूरियर द्वाराः सिंघल फाउंडेशन, द्वारा सिक्योर मीटर्स लिमिटेड, प्रतापनगर इंडस्ट्रियल एरिया, उदयपुर 313003 को भेजें।

या

आप सभी दस्तावेजों को स्कैन करके पी.डी.एफ़ (pdf) फॉरमेट में ईमेल करें: applications@bharatatmapuraskar.org या व्हाट्सएप्प द्वारा +91 73576 58777 पर भेजें।

चयन प्रक्रिया

सिंघल फाउण्डेशन प्रत्येक श्रेणी के विजेता चुनने के लिए एक उच्च गुणवत्ता वाली और निष्पक्ष प्रक्रिया अपनाती है। विजेताओं का निर्णय दो चरणों की प्रक्रिया द्वारा किया जायेगा। पहले चरण में वैदिक विशेषज्ञों की एक कमिटी, प्राप्त आवेदनों (शिक्षकों और विद्यार्थियों के नाम अज्ञात होंगे) की समीक्षा कर संभावित विजेताओं की छंटनी करके एक सूची बनाएगी। यह छंटनी आवेदकों द्वारा आवेदन पत्र में दी गई जानकारी के आधार पर की जाएगी।अतः आवेदन पत्र का पूरा और सही भरा जाना अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसके पश्चात् इस सूची पर निर्णायक समीति (ज्यूरी) जिसमें सभी वेदों के प्रतिष्ठित विशेषज्ञ होंगे, द्वारा विचार किया जायेगा। विजेताओं पर अपना अंतिम निर्णय लेने से पूर्व ज्यूरी चयनित विद्यालयों का दौरा करेगी और चयनित शिक्षकों और विद्यार्थियों से साक्षात्कार करेगी।

अनुशंसा

सिंघल फाउण्डेशन को विदित है कि कई वेद गुरु वेदाध्यापन को अपना धर्म समझ वेद के प्रति समर्पित हैं व वे किसी पुरस्कार इत्यादि के लिए अपना आवेदन नहीं देना चाहते। हम ऐसे पूर्णरूपेण समर्पित अध्यापकों को भी भारतात्मा पुरस्कार की प्रक्रिया से जोड़ना चाहते हैं। भारतात्मा पुरस्कार की इस तृतीय शृंखला (2019) से आदर्श वेदाध्यापक श्रेणी हेतु योग्य नामों की अनुशंसा करने का भी प्रावधान किया गया है | वेदाध्यापक श्रेणी हेतु निर्धारित मानदंडों एवं निजी ज्ञान के आधार पर कोई भी वैदिक विद्वान अथवा विद्यार्थी अपने गुरूजी का नाम व सम्पर्क जानकारी सिंघल फाउण्डेशन को ईमेल या SMS पर 15 मार्च से 24 मई 2019 के तक भेज सकते हैं। हम अनुशंसित गुरुजी से संपर्क कर उनका आवेदन प्राप्त करने का प्रयत्न करेंगे।

कथमावेदनीयम्

आवेदनपत्रप्राप्तेः अन्तिमतिथिः - १५/०६/२०१९ वर्तते। आवेदनपत्रं जूनमासस्य पञ्चदशः-दिनाङ्कात् पूर्वं सिंघलप्रतिष्ठानस्य पार्श्वे प्राप्नुयात्। अस्याः तिथेः पश्चात् प्राप्तावेदनपत्रोपरि नवदशोत्तरद्विसहस्रतमवर्षस्य पुरस्काराणां कृते विचारः न भविता।

प्रत्येकं श्रेण्याः कृते आवेदनपत्राणि अस्माकम् http://bharatatmapuraskar.org अन्तर्जालस्थानतः स्वीकर्तुं शक्यते। आवेदनपत्रम् +९१ ७३५७६५८७७७ इति दूरध्वनिक्रमाङ्कोपरि स्वनाम्ना सह स्वपत्रसङ्केतस्य सन्देशस्य प्रेषणे सति डाकमाध्यमेनापि प्राप्तुं शक्यते।

इदं सुनिश्चितं कुर्याद् यद् योग्यतामानदण्डानां पूर्तये भवद्भिः स्वाङ्कतालिका-प्रमाणपत्र-प्रलेखादीनि साक्ष्यरूपेण संलग्नीकृतानि।

भवद्भिः आवेदनपत्रं हस्तलेखेन अथवा "माइक्रोसॉफ्टवर्ड" इत्स्य प्रयोगेण पूरयितुं शक्यते । यदि भवन्तः आवेदनपत्रम् ईमेलमाध्यमेन प्रेषयन्ति चेत् केवलं .pdf-रूपेणैव प्रेषयन्तु, न तु .doc,.docx

पूर्णरूपेण पूरितम् आवेदनपत्रं डाकमाध्यमेन "सिंघल फाउंडेशन द्वारा सिक्योर मीटर्स लिमिटेड, प्रतापनगर इण्डस्ट्रियल एरिया, उदयपुरम् ३१३००३" इति पत्रसंकेतोपरि प्रेषयन्तु अथवा

भवन्तः आवेदनपत्रसहितसमस्तप्रलेखान् स्केनकृत्वा PDF प्रारूपमध्ये ईमेल कुर्वन्तु-applications@bharatatmapuraskar.org वा व्हाट्सएप्प कुर्वन्तु - +91 73576 58777

चयनप्रक्रिया

सिंघलप्रतिष्ठानं प्रत्येकं श्रेण्याः विजेतारं चेतुमेकाम् उत्कर्षशालिनीं निष्पक्षप्रक्रियामाचरति। विजेतृणां निर्णयः चरणद्वयात्मिकया प्रक्रियया भविष्यति। प्रथमचरणे वेदज्ञानां समितिरेका प्राप्तावेदनपत्राणि (अध्यापकानां छात्राणाञ्च नामानि अज्ञातानि भविष्यन्ति) सम्यक् समीक्ष्य सम्भावितविजेतॄणां शोधनं कृत्वा एकां सूचीं निर्मापयिष्यति। एतच्छोधनप्रक्रिया आवेदकैः आवेदनपत्रेषु प्रदत्तसूचनाश्रिता भविष्यति। अतः आवेदनपत्रस्य पूर्णतया सम्यक्तया च परिपूरणम् निर्णायकमस्ति। एतदनु सम्भावितविजेतारः निर्णायकसमित्या (यस्यां सकलवेदानां प्रतिष्ठिताः विशेषज्ञाः भविष्यन्ति) विचारयिष्यन्ते। निर्णायकदलं विजेतॄणां अन्तिमनिर्णयात्पूर्वं चितानां विद्यालयानां भ्रमणं विधास्यति तथा च चिताध्यापकछात्रैस्सह मेलिष्यति।

अनुशंसा

सिंघलप्रतिष्ठानेन ज्ञायते यद् बहवः वेदाध्यापकाः वेदाध्यापनं स्वधर्मम् इति मत्वा वेदसेवायां समर्पिताः किन्तु तैः पुरस्कारार्थम् आवेदनं न क्रियते | वयं एतादृशः पूर्णरूपेण वेदाध्यापने समर्पितानाचार्यानपि भारतात्मापुरस्कारचयनप्रक्रियया योक्तुमिच्छामः | भारतात्मापुरस्कारस्य अस्यां तृतीयशृंखलायां(२०१९ तमवर्षस्य) आदर्शवेदाध्यापकश्रेण्यां योग्यनाम्नाम् अनुशंसायाः प्रावधानमपि विहितमस्ति | यः कोऽपि वैदिकविद्वान् वा विद्यार्थी पुरस्कारार्थं वेदाध्यापकश्रेण्यां निर्धारितमानदंडानां पूरयितुः स्वगुरोः वैदिकविदुषः वा नाम-संपर्कसंकेतादिकञ्च सिंघलप्रतिष्ठानस्य पार्श्वे ई-मेल वा SMS माध्यमेन पञ्चदशमार्चतः २४ मई २०१९ पर्यन्तं प्रेषयितुं शक्नोति । वयम् अनुशंसिताचार्येण सह संपर्कं विधाय आवेदनं प्राप्तुं यतिष्यामहे।

How to apply

The last date for receipt of applications at the offices of Singhal Foundation is **15th Jun 2019**. Applications received after this date will not be considered for the 2019 award.

Application forms for each of the three categories can be downloaded from our website **www.bharatatmapursakr.org**. They can also be obtained by sending SMS with your full address to +91 73576 58777 and forms will be sent by post.

Please make sure that you provide all the documentary evidence / certificates / mark sheets etc. needed to establish that you meet the qualifying criteria.

You may fill he application form either by hand or using MS Word©. If you are submitting your application electronically, please only submit .pdf files and not .doc or .docx.

Completed application forms should be sent

- By post or courier to Singhal Foundation, C/o Secure Meters Ltd, Pratapnagar Industrial Area, Udaipur 313003;
- You can also scan all the documents (.pdf files) and send an email to applications@bharatatmapuraskar.org or Watsapp on +91 73576 58777.

The selection process

Singhal Foundation runs a high quality and impartial process for the selection of the winners in each category. The decision of the winners will be made in two stages. At the first stage a committee of Vedic experts will review all application forms received (on an anonymous basis for teachers and students) to produce a short list of possible winning candidates. This short listing will based on the information provided the applicants on the application forms. Therefore, filling out the application forms completely and correctly is critical. The shortlist of candidates will then be considered by a Jury comprising eminent experts in all the Vedas. The Jury will visit the short-listed schools and meet the short-listed teachers and candidates before making their final decision on the winners.

Recommendation

The Singhal Foundation is aware that many Veda-teachers are devoted to the Vedas to understand Veda-teaching as their religion and they do not want to apply their applications for any award etc. We also want to connect such full-time dedicated teachers to the process of Bharatatma award. It has also been proposed to recommend suitable names for the ideal Veda-teacher's category from this third series (२०१९) of the Bharatatma award. Any Vedic scholar or student can send his Veda-teacher's name and contact information to Singhal Foundation on the basis of the norms and personal knowledge for the Veda-teacher's category, from 15 March to 24 May 2019 on email or SMS. We will contact the recommended Veda-teacher and try to get their application.

*वेदाध्ययन समकक्षता सूची

अद्ययन स्तर	ऋग्वेद	कृष्ण यजुर्वेद	शुक्ल यजुर्वेद	सामवेद	अथर्ववेद
स्तर - 1	क्रमपाठ	क्रमपाठ	क्रमपाठ	सम्पूर्ण आर्चिक संहिता, प्रकृतिगान से महानाम तक, सम्पूर्ण छान्दोग्यमंत्र ब्राह्मण	सम्पूर्ण अथर्ववेद संहिता, गोपथ ब्राह्मण, मुण्ड माण्डुक्य उपनिषद, माण्डुकीशिक्षा कौशिक गृहसूत्र, वैखानस श्रोतसूत्र
स्तर - 2	घनपाठ	घनपाठ	घनपाठ (बृहदारण्यक के साथ)	सामवेद संहिता के पूर्वार्चिक और उत्तरार्चिक का सम्पूर्ण पादपाठ, ऊहगान, रहस्यगान और सम्पूर्ण छान्दोग्योपनिषद्	उपर्युक्त और अथर्वज्योतिष, कौश्यनिघंटु, अष्टाध्यायी, संहिता पञ्चलक्षण भाष्य

सिंघल फाउण्डेशन

सिंघल फाउण्डेशन (एक पंजीकृत न्यास) की स्थापना स्व. श्री पी.पी. सिंघल के तीन पुत्रों ने मिलकर की थी। इस फाउण्डेशन की स्थापना का उद्देश्य उन परोपकारी कार्यों को जारी रखना था जो स्व. श्री पी.पी. सिंघल ने अपने जीवन काल में किये थे। सिंघल फाउण्डेशन शिक्षा के विकास में अच्छे और योग्य कार्यों के लिये ज़रूरतमंद छात्रों, विद्यालयों, खेलों में अच्छा प्रदर्शन करने वाले खिलाड़ियों, दिव्यांगों और अनाथ बच्चों के विद्यालयों को आर्थिक सहायता प्रदान कर रही है।

श्री अशोकजी सिंघल श्री पी पी सिंघल के छोटे भाई थे जिन्होंने पूरे सिंघल परिवार को वेद सेवा के लिये प्रेरित किया। अशोकजी वैदिक शिक्षा के कट्टर समर्थक थे। वे यह चाहते थे कि सब लोगों को वेदों की शक्ति, उनकी शिक्षाओं और उनके ज्ञान का अहसास हो तथा वे दैनिक जीवन में वेदों से हो सकने वाले लाभों के महत्व को समझें।

सिंघल फाउण्डेशन के माध्यम से हम वेद सेवा के प्रति हमारी वचनबद्धता जारी रखना चाहते हैं। यद्यपि क्षेत्रीय और स्थानीय स्तर पर कई परोपकारी संस्थाएं हैं जो वैदिक शिक्षा और वेद विद्यार्थियों को पहचान दिलाने के लिए सहयोग कर रहीं हैं, हमने देखा कि राश्ट्रीय स्तर पर इस बारे में कोई प्रक्रिया नहीं है। सिंघल फाउण्डेशन ने भारतात्मा अशोकजी सिंघल वैदिक शिक्षा पुरस्कार स्थापित करने का निर्णय लिया जो कि वैदिक शिक्षा के क्षेत्र में पहला ऐसा राष्ट्रीय स्तर का पुरस्कार होगा। इनका दोहरा उद्देश्य होगा, पहला वैदिक शिक्षा को प्रोत्साहन और दूसरा श्री अशोकजी सिंघल के नाम को चिरस्थायी बनाए रखना जिन्होंने अपना समस्त जीवन वेदों के लिए समर्पित कर दिया।

फाउण्डेशन वार्षिक रूप से निम्न श्रेणियों में यह पुरस्कार देगीः
- उत्तम वेद विद्यालय
- आदर्श वेद अध्यापक; और
- उत्कृष्ट विद्यार्थी

हम आशा करते हैं कि ये पुरस्कार अधिक से अधिक विद्यालयों, अध्यापकों और विद्यार्थियों को वेद शिक्षा अपनाने और समाज के भले के लिए उसे विस्तार देने के लिये प्रोत्साहित करेंगे।

सिङ्घलप्रतिष्ठानम्

तैर्महाभागैः स्वजीवनकाले समारब्धानां धार्मिककार्याणां अनुवर्तनाय स्वर्गीयानां पि.पि.सिङ्घल् महाशयानां त्रिभिः पुत्रैः सिङ्घलप्रतिष्ठानम् (पञ्जीकृतसंस्था) प्रत्यष्ठाप्यत। चिरात् सिङ्घलप्रतिष्ठानं, विद्यार्थिभ्यः, विद्यालयेभ्यः, क्रीडाभ्यः, क्रीडकेभ्यः, विकलाङ्गेभ्यः, तदर्थपाठशालाभ्यः, इतरानेकविधसाङ्घिकाभिवृद्धिकार्येभ्यः धनसाहाय्यद्वारा अर्हाणि योग्यानि निमित्तानि प्रोत्साहयदास्ते।

श्रीमान् अशोकसिङ्घल जी, पि.पि.सिङ्घलमहोदयस्य अनुजः। सः पूर्णं सिङ्घलकुटुम्बं वेदसेवायाः दिशि प्राचोदयत् । अशोक जी महाभागः वैदिकाध्ययनानामुत्कटः उपष्टम्भकः आसीत्। वेदानां शक्तिः, बोधनानि, विज्ञानं, एवं प्रयोजनानि, तैरस्मद्दैनन्दिनजीवने निर्वोढुं शक्यां भूमिकां च सर्वे जानीयुरिति सः ऐच्छत्।

सिङ्घलप्रतिष्ठानद्वारा वेदविषयिणीं अस्मत्प्रतिनिबद्धतां वयं अनुवर्तयितुमिच्छामः। स्थानिकक्षेत्रस्तरे, प्रान्तस्तरे च वेदविद्यां प्रोत्साहयितुं वेदपण्डितान् सम्मानयितुं च बहूनि धार्मिकसंस्थानानि यद्यपि सन्ति, तथाऽपि जातीयस्तरे कश्चन पुरस्कारो नास्ति। अतः सिङ्घल प्रतिष्ठानं “भारतात्मा अशोक जी सिङ्घल वेदविद्यापुरस्कार” इतिनाम्ना जातीयस्तरे प्रथमान् वार्षिकपुरस्कारान् व्यवस्थापयितुं निरणयत्। इमे पुरस्काराः जातीयस्तरे वेदविद्यायां उत्कृष्टतां प्रदर्शयन्तः सन्तः, यशःकायानां अशोक जी सिङ्घल् महाभागानां नाम शाश्वतीकरिष्यन्ति।

प्रतिष्ठानम् प्रतिवर्षं त्रिभ्यः पुरस्कारान् वितरति-

१. उत्तमवेदविद्यालय
2. आदर्शवेदाध्यापकः
3. उत्कृष्टवेदविद्यार्थी

वयमाशास्महे यदिमे पुरस्काराः समाजहिताय वेदाध्ययनसरणिमनुसर्तुं इतोऽपि अधिकाधिकं वेदपाठशालाः अध्यापकांश्च प्रोत्साहयिष्यन्तीति ।

Singhal Foundation

Singhal Foundation (a registered Trust) was established by the three sons of Late Shri PP Singhal to continue the charitable works initiated by him during his lifetime. Singhal Foundation has been promoting good and deserving causes by funding needy students, schools, sports & sports persons, schools for the physically challenged and a variety of other social and developmental causes.

Sh Ashokji Singhal was the younger brother of Sh PP Singhal and he inspired the entire Singhal family towards Ved seva. Ashokji was an ardent supporter of Vedic studies. He wanted everyone to realise the power, the teachings, the wisdom and the benefits of the Vedas and the role they can play in our every day lives.

Through the Singhal Foundation, we seek to continue our commitment to Ved seva. While there are a number of charities supporting Vedic education and rewarding Veda scholars at regional or local levels, there is no award at the national level. Therefore the Singhal Foundation decided to institute the annual “Bharatatma Ashokji Singhal Vedic Awards” as the first National Level Awards in Vedic education. These awards would, both, showcase excellence in Vedic education at a National Level and of perpetuate the name of Shri Ashokji Singhal.

The Foundation will annually give three awards as under:
- The best Vedic School;
- The ideal Vedic Teacher; and
- Excellent Veda Student

We hope that these awards will encourage more and more schools, teachers and students to take up the study of the Vedas and propagate them for the good of society.

Singhal Foundation
c/o Secure Meters Ltd, Pratapnagar Industrial Area, Udaipur 313003 | T: +91 294 3062120 | E: info@singhalfoundation-udaipur.org
www.bharatatmapuraskar.org